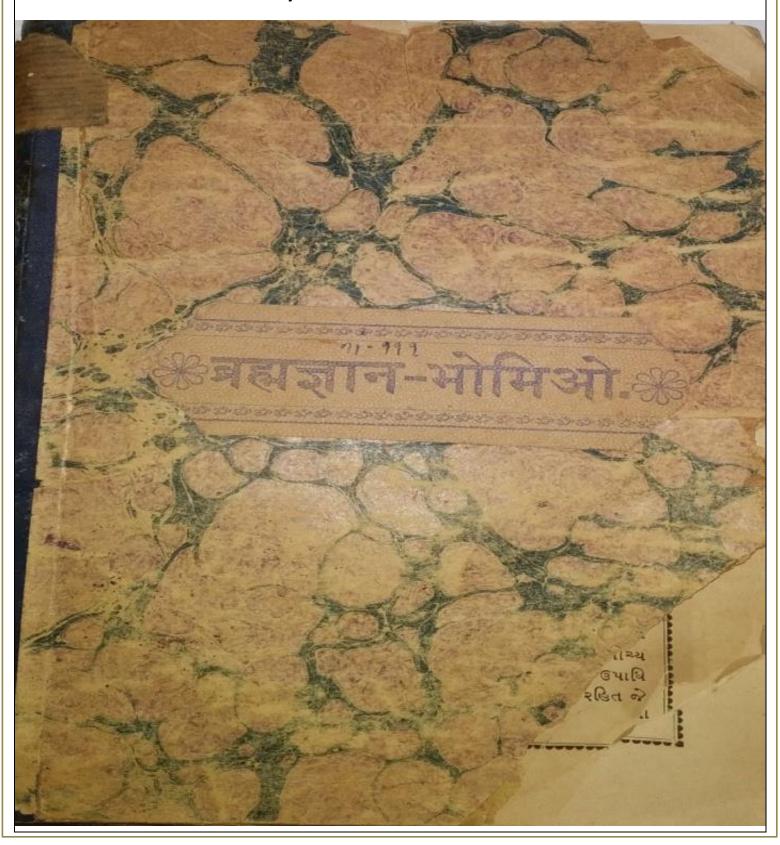
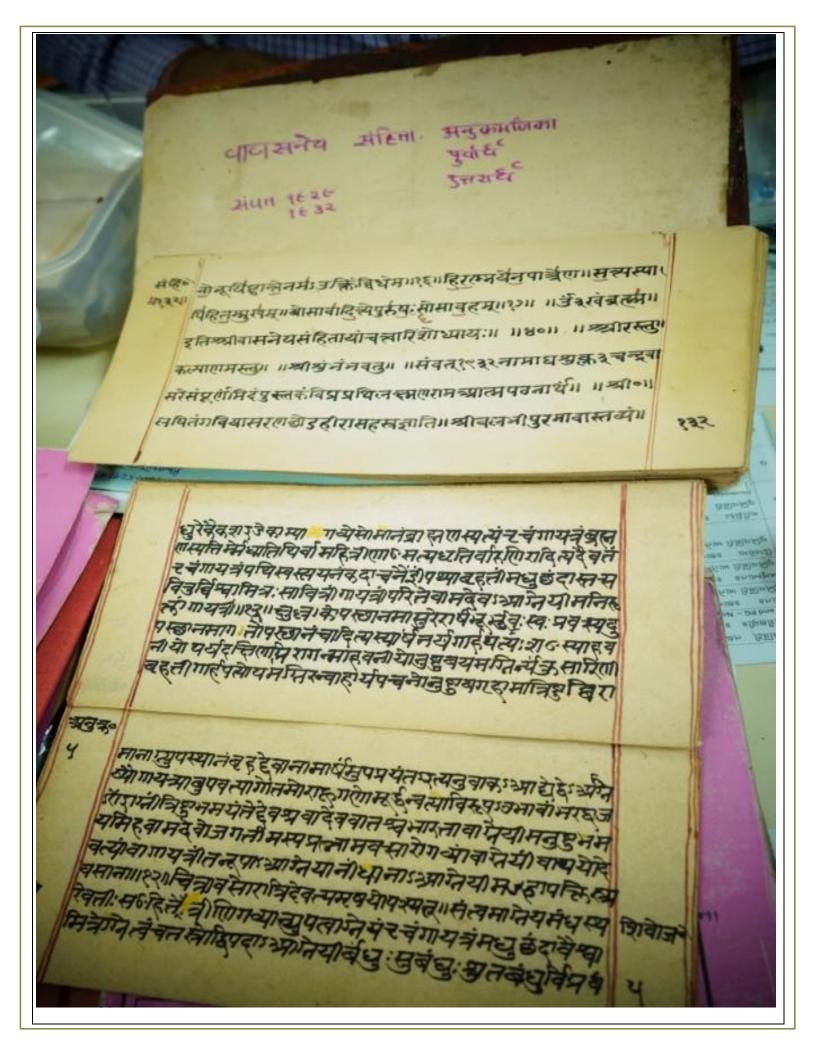
3.3.1 - Collection of rare books,

Manuscripts, special reports or any other knowledge resource for library enrichment





elm

॥श्रीः॥

: उपानिषत्पञ्चरत्

वर्षात् व्रद्योपनिषद्, कैवर्धोपनिषद् सर्वोपनि-षत्सार व्रह्मविष्यु और नाद्वितृपनिषद्

भाषाजुनादसहित

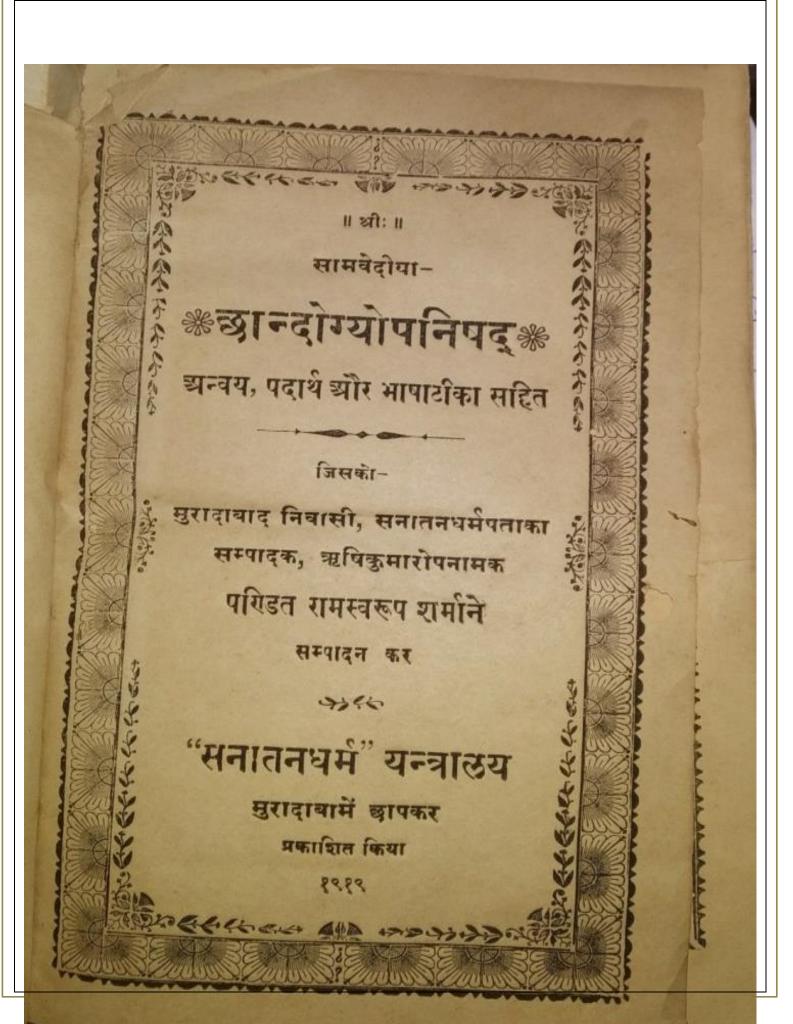
मिट कु॰ समस्वरूप सर्माने सम्पादन कर

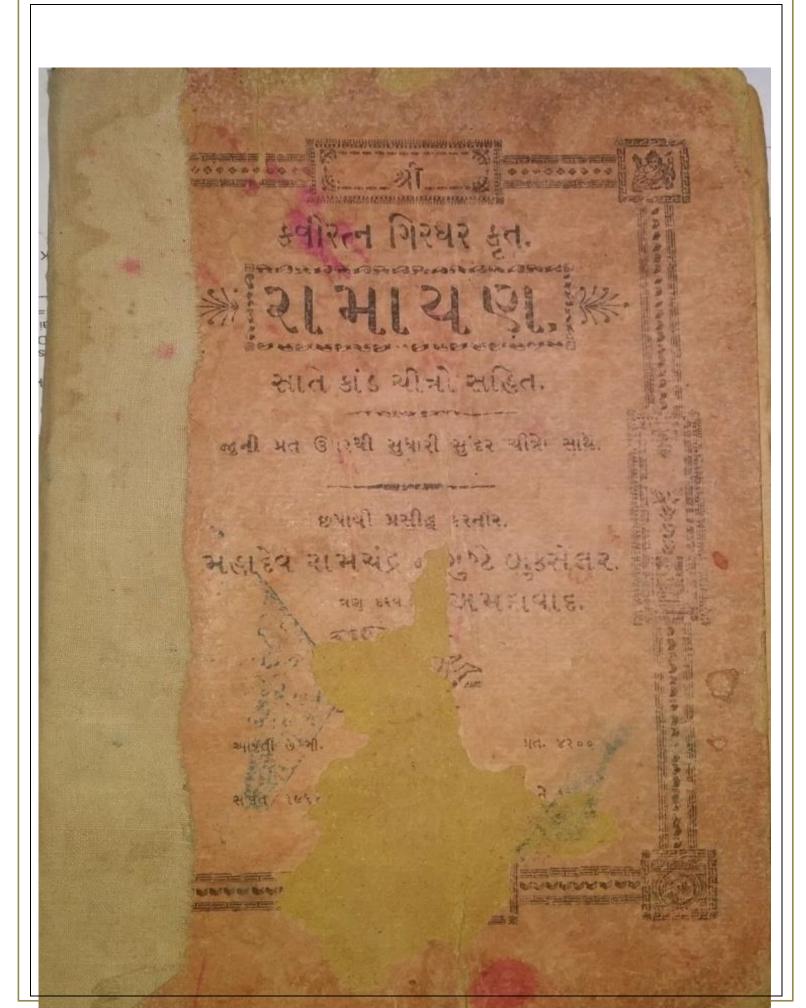
सनातवधर्भ प्रेस

मुरावाक्षवमं छापकर प्रकाशित किया

FREE TO SECURE ASSESSED AND ASSESSED AS

できるというできたができたができたからなったができると







॥ श्रीः ॥

वैद्यजीवनम्।

भिषग्वर्यलोलिम्बराजकविकृतम्।

श्रीमद्यतिवर्यमुखानन्दकृतया दीपिकया।

पं॰ मिहिरचन्द्रकृतभाषाविवृत्या च समन्वितम्।

-80mH>+m0s-

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्टिना

मुम्बय्याः

स्वकीय ''श्रीवेङ्कटेश्वर'' (स्टीम्) मुद्रणालये

मुद्रियत्वा प्रकाशितम्।

संवत् १९६७, दाके १८३२.

अस्य ग्रन्थस्य पुनर्भृद्रणादयोऽधिकाराः १८६७ वाषिक २५ तमराज-नियमानुसारेण "श्रीचेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीनाः संति ।

शा. जाहा जिलामाला इसिराव्ह यह संग्रह Pub 1800 1893

॥ श्रीः ॥

॥ ॐ तत्सद्रह्मणे नमः॥

श्रीशुक्रयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिना

आहिकसूत्राविः।

पुरन्दरोपाह्वविङ्लात्मजवैद्यनारायणशर्मणा

अनेकग्रन्थेभ्यः सङ्गृहीता ।

तस्या इयं विशिष्टसङ्गहयुता

आवृत्तिः अष्टमी ।

गुर्जरोपाह्वजनार्दनात्मजञ्यंबकशर्मणा

सुम्बापुर्याम् निर्णयसागरास्त्यसुद्रणयन्नालये सुद्रापयित्वा श्राकाश्यं नीता च ।

शकाब्दाः १८३८ ज्येष्टमासः।

संवत् १९७३



श्रीशुक्तय जुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिनां

आहिकसूत्राविः।



शकाब्दाः १८३८ विकमाब्दाः १९७२ आषाढमासः।

किंमत २ रुपये.

美兴兴兴美兴

The Department of Public Instruction, Bombay

ANU-BHASHYA

OF

VALLABHĀCHĀRYA

EDITED

WITH A NEW COMMENTARY, THE BALBODHINI,

BY

PANDIT SHRIDHAR TRYAMBAK PATHAK, Shāstri, Deccan College, Poona.

PART I TEXT

First Edition ; 1000 Copies.

1921.

Price Three Rupees and Four Annas.

॥ आः ॥

श्रीमद्रहभाचार्यप्रणीतं

श्रीमदणुभाष्यम् ।

~~~~

पाठकोपाह्वश्रीधरशर्मविरचितया बालबोधिन्याख्यटीकया समेतम्।

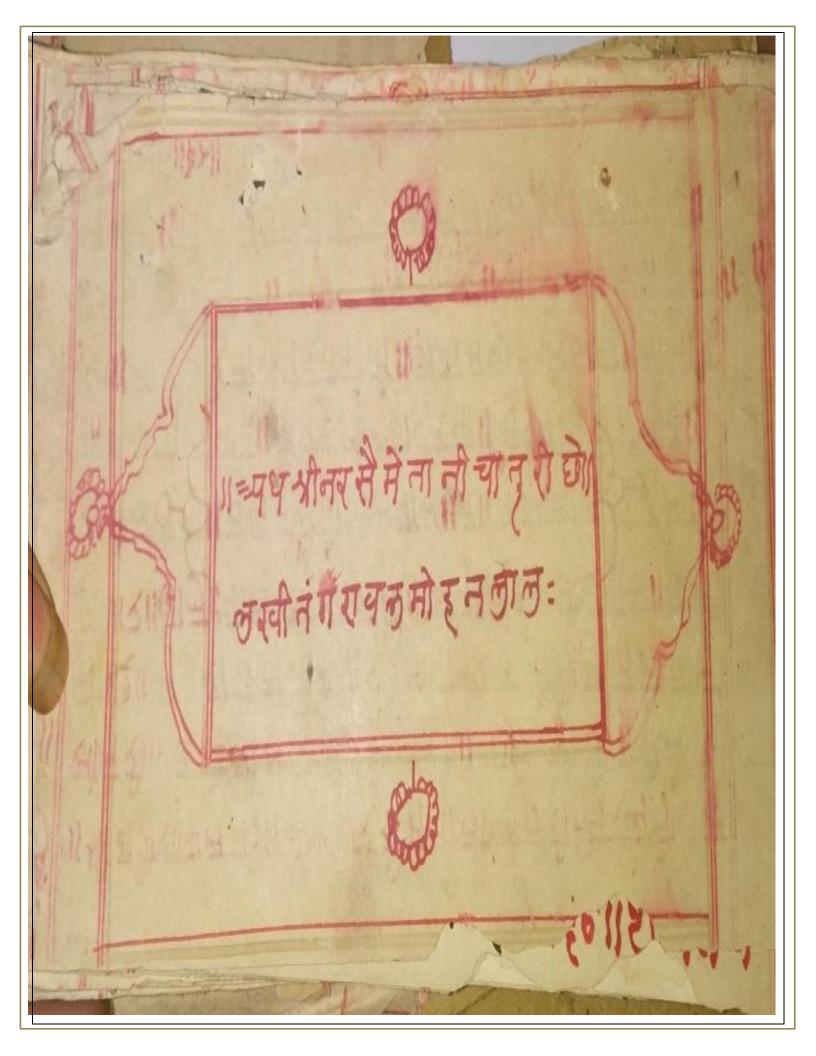
तच्च

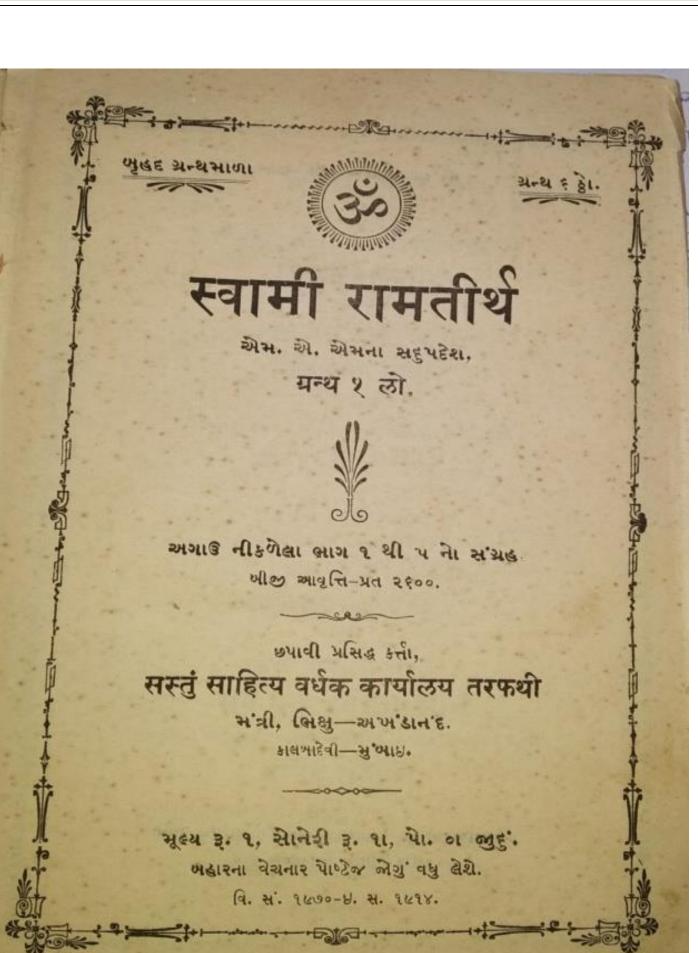
मुम्बापुरस्थराजकीयग्रन्थशालाधिकारिणा प्रकाशितम्।

शाके १८४३ स्निस्ताब्दे १९२१

प्रथमयमङ्कनावृत्तिः

मूल्यं सपादं रूप्यकत्रयम्





भाश्य र्मु नने भाषा है। मु अव अना री सांमान के के हरी सा ने सांमान के जे अंसु के पड़े। वे स्मयना विसरां मा। आ अंगे को टी अने म सो भागि से मरो म अमिरां मा। तमे कला पाड़ी को रमा । समर ४ श्री चन सांमा। है। स्मयनो ते सार श्रुती कहे। आ नं ह के ह जियो ना सा के श्यकार ण कही मु जने।। हुं ता मारी हा स । ए । माध्यतारा मंननी।। मुंने के ने करं णानी थां ना के ते कां म ण गारि खें। तारी हरी सध्य बु ध्यसां ना श्वा विशेषा वे हरे ने । जेता कं जियं ना। निम प मां लावुं ना धरी।। लाविक कं प्रसंना १२॥ मही धर मन मां धरो धीर जा। न ही आ कला नुं कां मा। नरसे या ना ना धरी।। मुंने कही ने नुना म।। १ र।। वह के ।। १।। वह जा

भागित्रायनमः॥ स्पन् रसेमेनानीचान् रिल्यिन् राम सामरी॥ सुणानी स सुणारे से एजी॥ सां ने भरो छो नं मेने ए नी॥ १॥ सुद्रख छे तमारे ना पनी॥ याना जी को ने मुजने यान जी॥ २॥ खाना थान को ने यान मा॥ कं भ पई रथा छो उ रास॥ सां ने जा मां मां मां मां साम हा को छो निस्त्रास शा प्रम्ता सुप्र खा॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥ करमां एं मामार॥ कपो लक्षरकां है रथा॥ सुउपन्यो छे उचार॥